(10)

पदोन्नति

पद की लगी है लिप्सा हर एक आदमी को,
पद के लिए ही सारी भाग दौड़ जारी है।
पद से है पूछ धन मान सारा पद से है,
पद पूज पूज कई बने अधिकारी है।
माल मिलेगा असीम चाल बदलेगा भाग्य,
यही सोच-सोच मन हर्ष बड़ा भारी है।
बालक भी खर्च की बनाते योजना अनेक,
गर्व से निहारती हमारी अब नारी है।। 1।।

ध्वस्त हुए सारे स्वप्न कल्पना हुई अदृश्य,
पद मिला किंतु हाथ में कुछ भी न आया है।
नाम बदला है किंतु काम बदला न कुछ,
आफिस वही है कार्यभार ही बढ़ाया है।
मात्र चार सौ की वृद्धि वेतन में हो गई है,
खो गई सुख शान्ति शिर ही खपाया है।
बैठे गमगीन सोचते थे गृहिणी ने कहा,
बिल लेके देखो अखबार वाला आया है।। 2।।

घर से दबाव बढ़ता ही जा रहा था रोज,
आफिस तो बदला न, घर ही बदल दो।
जान पहचान कुछ तो बढ़ाओ भाग्यवादी,
बुद्धि को लड़ाओ कुछ कर्म पै भी बल दो।
दूसरो के काम तो सदा ही करते रहे हो,
अपने कुटुम्ब के सवालों को भी हल दो।
इसलिए किया था विवाह न तुमसे मैंने,
सारी सुख कामनाएं फूल सी मसल दो।। 3।।

बड़ा घर हमको भी मिल गया किंतु एक,
बाधा बड़ी सामने हमें पड़ी दिखाई थी।
दिखता था मेल ऊपरी निवासियों के बीच,
गहरी परंतु मन बीच एक खाई थी।
रस ले के सुनी जाती निन्दा दूसरों की किंतु
गढ़ती थी सीने में पराए की बड़ाई थी।
नौकरानियां बनी हुई थीं देवदूत और,
महाशक्तियों में शीत युद्ध सी लड़ाई थी।। 4।।

मानना विशिष्ट निज को अनिष्टकारी सदा,
आसुरी कुवृत्ति अहंकार का प्रकाश है।
मानव से मानव की भिन्नता का पोषक है,
मोषण का शोषण का भीषण प्रयास है।
बढती उदारता न ज्ञान शक्ति साथ यदि,
होता न धृति का समुज्ज्वल विकास है ।
तो यह पदोन्नति है मोहक कनक ग्रास,
विधि में प्रतीति ह्रास और लोक त्रास है ।। 5।।

नव प्रभात में फैले जैसे,
ही स्वर्णिम अरुणायी।
शुभ संकल्पों में आए वैसे,
नित नव तरुणायी।
निर्मल मन हो अमल हास्य
सहयोग और समता हो।
अषिव निवारण की अक्षय
ईश्वर प्रदत्त क्षमता हो।।

- शिव कुमार मिश्र